SPECIMEN FORMAT FOR THESES OF MONTH

Faculty	:	School of Arts & Social Sciences
Department	:	Hindi
Branch/ Area:	:	Hindi Literature
Sub Subject Heading:	:	Hindi Literature
Candidate's Name	:	Shameena. T
Candidate's Address with email	:	Thenoth House Kakkavayal Post Kalpetta Wayanad Kerala Email: shameenathenoth@gmail.com
Title of the Thesis	:	CHANDRAKANTA KE UPANYASON MEIN STRI SWATVA KE VIVIDH ROOP
(i) In Roman Script		-
(ii) In Roman Script		-
Nomenclature of Degree:	:	Ph.D.
Month & Year of Enrolment:	:	January, 2021
Month & Year of Registration:	:	January, 2021
Month &Year of Submission:	:	August 2024
Month &Year of Award	:	January, 2025
Name of Supervisor	:	Dr. Shobhana Kokkadan
Designation of Supervisor	:	Professor & Head, Dean of Arts and Social Sciences
Centre/Department/School in which Research was conducted	:	Department of Hindi, School of Arts and Social Sciences
University's Name & Address	:	Avinashilingam Institute for Home Science and Higher Education for Women, Coimbatore – 43.

Abstract within 300 words:

उपन्यास एक ऐसी श्रेष्ठ विधा है, जिसमें मानव जीवन और समाज यथातथा प्रतिबिम्बित एवं -प्रतिफलित होती है और उसमें मानव जीवन की किसी न किसी समस्या या घटना का ज़िक्र होना स्वाभाविक है।समकालीन महिला लेखिकाओं में सामाजिक जागरूकता, साहित्यिक विषयों की विविधता, विषयगत नवीनता को बनाये रखने में चन्द्रकान्ता की रचना कौशल अत्यन्त सराहनीय एवं प्रशंसनीय है।

उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने अपने मन के अंदरद्वंद्वों और समाज में घटित होने वाली विभिन्न प्रकार की नकारात्मक स्थितियों को पाठकों तक पहुँचाया। उन्होंने वही लिखा जो खुद भोगा, और जो दूसरों को भोगते देखा, महसूस किया। उन्होंने अपने उपन्यासों में एक दायित्वपूर्ण लेखिका की भूमिका बखूबी से निभाने के साथ साथ स्त्रियों की समसामयिक समस्याओं एवं-स्वत्व के विविध रूपों का भी उल्लेख किया गया हैं।

'चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप' नामक प्रस्तुत शोध प्रबन्ध में सात उपन्यासों का विश्लेषणात्मक अध्ययन प्रस्तुत किया गया है, जिनमें स्त्री स्वत्व के विविध रूपों, स्त्री के युगीन जीवन्त प्रश्नों, स्त्री की मूल्यों-मूल्यहीनताओं, रिश्तों के बिखरावों, संघर्षों और समस्याओं, स्त्रियों के विभिन्न प्रकार की चुनौतियों, बुनियादी सच्चाइयों, समाज के विभिन्न पहलुओं, बदलते स्त्री-पुरुष सम्बन्धों, विघटित दाम्पत्य मूल्यों, पश्चिमी प्रभावों आदि को अपनी रचनाओं के दौरान अभिव्यक्त करने में प्राथमिकता दी हैं। चर्चित उपन्यासों के माध्यम से उन्होंने भारतीय समाज के विभिन्न जीवन और स्त्री स्वत्व के विविध रूपों के आधार पर स्त्रियों की अनेक समस्याओं का तार्किक ढंग से चित्रण किया है जिसमें स्त्रियों की समस्याओं, निष्कासित लोगों की समस्याओं, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, बाल विवाह, अंतर्रजातीय विवाह, अंतर्रधर्मीय विवाह की समस्या, आतंकवाद, विदेशाकर्षण की समस्या,

अवैध विवाह और प्रेम विवाह के दुष्परिणामों से पीड़ित स्त्रियों का जीवन आदि को विभिन्न रूपों में उजागर करने के साथ साथ दहेज प्रथा एवं आतंकवाद को वर्तमान युग की भयानक त्रासदी बताया है।-

Major objectives:

- शोध के अध्ययन से स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को पहचानना।
- भारत में स्त्री की दशा एवं दिशा को समाज में अवगत कराना।
- स्त्री के विरुद्ध होनेवाली समस्याओं, संघर्षों, विसंगतियों, तनावों, व्यथाओं को तार्किक क्षमता से उभारने को कोशिश करना।
- दाम्पत्य जीवन से जुड़ी विभिन्न प्रकार के संघर्षों को जानकार वैवाहिक जीवन की पवित्र सम्बन्धों के महत्वों को अवगत कराना।
- अस्तित्वहीन एवं आत्मसम्मानहीन स्त्री की मानसिक तनावों एवं संघर्षभरित ज़िन्दगी से त्रस्त स्त्री की मानसिक चेतनाओं को दर्शाना।
- बदलते जीवन संदर्भों में खो चुकी नैतिकताओं एवं आकांक्षाओं की पुनर्परीक्षण कर लेना।
- अस्तित्वहीन यानि अस्मिताहीन स्त्री को यह अवगत कराना कि कोई भी स्थिति एवं सन्दर्भ अंतिम नहीं होता।
- असंतुलित परिवार के स्त्रियों के दाम्पत्य पवित्र बंधन के बनने व बिगड़ने की मूल समस्याओं को स्पष्ट करना।

I. Hypothesis:

चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूप, स्त्री की समकालीन युगीन परिवेश, अंदरद्वंद्व, असमानता, वास्तविकता जटिलता, विसंगतियाँ, स्त्री स्वत्व के नए अर्थ सन्दर्भ, स्त्री स्वत्व की समस्याएँ, स्त्री अस्मिता की तलाश, प्रतिरोध एवं संघर्ष आदि विविध मुद्दों का चित्रण दृष्टिगत होते हैं।

II. Methodology:

- ✓ विषय चयन
- ✓ साहित्य की समीक्षा
- ✓ अनुसन्धान की रूपरेखा
- ✓ सामग्री संकलन
- ✓ उपन्यासों का विश्लेषण
- ✓ उपन्यासों में प्रतिपादित विभिन्न यथार्थ का विश्लेषण
- ✓ उपसंहार
- ✓ अनुसंधान की उपलब्धियाँ
- ✓ अध्ययन की नई दिशाएँ
- ✓ संदर्भ ग्रन्थ सूची

I. Findings:

वर्तमान युग में उपन्यास सर्वाधिक लोकप्रिय विधा के रूप में विकसित हो चुका है। यह विधा मानवीय संवेदना के अनेक स्तरों एवं स्वरों को प्रभावशाली ढंग से व्यक्त करने की क्षमता रखती है। युग चेतना और वैचारिक परिवेश से प्रभावित होकर उपन्यासकार रचना के क्षणों में मूलतः संघर्षों और सच्चाइयों से गुज़रता है। समकालीन महिला उपन्यासकारों में सुप्रसिद्ध लेखिका चन्द्रकान्ता ने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के विविध रूपों, स्त्री के युगीन जीवन प्रश्नों, स्त्री की मूल्यों-मूल्यहीनताओं, रिश्तों के बिखरावों, संघर्षों और समस्याओं को अभिव्यक्त करने में प्राथमिकता दी हैं। उनकी साहित्यिक रचनाएँ अपने अनुभव का प्रामाणिक दस्तावेज होने के नाते उन्होंने मानव जीवन की सरल और सुन्दर घटनाओं को वास्तविकता की सुन्दर माला में पिरोया है। उनके उपन्यासों में स्त्रियों की समस्याओं, कश्मीर से निष्कासित लोगों के संघर्ष,

आतंक के भयानक दुष्परिणाम, अनमेल विवाह, दहेज प्रथा, विवाह पूर्व एवं विवाहेतर अवैध सम्बन्ध, प्रेम विवाह के दुष्परिणामों से पीड़ित स्त्री जीवन, स्त्रियों की स्वत्वहीनता, विदेशाकर्षण, रिश्तों के बिखराव और असंवेदनशीलता के कारण मध्यवर्गीय लोगों के जीवन में उत्पन्न होने वाली समस्याओं का निर्भीकतापूर्वक चित्रण किया है। लेखिका ने चर्चित उपन्यासों के द्‌वारा स्त्री की आर्थिक स्वतंत्रता का समर्थन किया है। अस्तित्वहीन स्त्रियों के प्रति अपनी सहानुभूति व्यक्त कर स्त्री के जीवन में विकास के मार्ग को अवरुद्ध करनेवाली पारम्परिक सोच को एक त्रासदी के रूप में अभिवर्णित किया है। उपन्यासों में निम्न एवं मध्यवर्गीय परिवारों में पनप रही ऊब, घुटन व अशान्ति के नेपथ्य में स्त्री जीवन को नियंत्रित करने वाली आर्थिक परावलंबिता, साँस्कृतिक दबाव आदि को वस्तुनिष्ठ रूप से समाज के सामने रखा है। समान अधिकारों की माँग, अस्तित्व की सुरक्षा आदि मुद्दों पर प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से लेखिका ने मौलिक विचार व्यक्त किए और स्त्री के व्यक्तित्व की गरिमा का खूब समर्थन किया है।

आज स्त्रियाँ पारम्परिक मूल्यों की बजाय नए मूल्यों को स्वीकार करने में सक्षम हो गई हैं। शिक्षा के माध्यम से उन्होंने उन मूल्यों के खिलाफ विद्रोह करने की क्षमता और ताकत हासिल कर ली है जो उनकी स्वतंत्रता के उद्देश्य को प्राप्त करने में बाधा डालते हैं। अपने उपन्यासों के माध्यम से गलत रास्ते में चलनेवाले आधुनिक स्त्री का खुला चित्रण हमारे सामने प्रस्तुत करते है। इन सारी स्त्री पात्रों के स्वत्वों एवं चरित्रों का अध्ययन करके मैं इस निष्कर्ष पर पहुँचती हूँ कि

- स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को लेकर अध्ययन करना अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि है।
- स्त्री स्वत्व मूलतः स्त्री चिंतन से जुड़ा एक पहलू है, जिसके केन्द्र में उनके सम्पूर्ण अस्तित्व को पहचानने की विचारधारा है। यह शोध की मुख्य उपलब्धि है कि स्त्री को समाज में पूर्ण रूप से प्रतिष्ठित करना और उसे एक इंसान के रूप में देखना और स्वीकारना।

- लेखिका द्वारा चित्रित, विवेचित स्त्री पात्रों के स्वत्व एवं अस्मिता अपने आप में बेजोड़ है, जो कि एक सशक्त साहित्य की प्रबल धारा के रूप में प्रवाहमान एवं चर्चित है। अनुसंधान का क्षेत्र इससे निश्चित ही अपनी उपलब्धि को प्राप्त करता है।
- स्त्री अपने स्वत्व के तहत अपने अधिकारों के प्रति सजग हो रही है, जो एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।
- चन्द्रकान्ता एक यथार्थवादी लेखिका है, उनका यथार्थवाद मानवातावादी विचारधारा पर आधारित है, जो बृहद सामाजिक धरातल पर भारतीय जन जीवन के कई पक्षों के कलात्मक विश्लेषण करते है और सामाजिक चेतना के नए आयामों और क्षितिजों को भी खोलते हैं।
- चन्द्रकान्ता बहुमुखी प्रतिभा की धनी है, एक जागरूक कलाकार हैं; जिन्होंने उपन्यासों के माध्यम से व्यक्ति के बाह्य जगत, विशेषकर स्त्रियों की स्वत्वहीनता के उन तमाम समस्याओं का आकलन किया है, जो इक्कीसवीं सदी के समसामयिक परिप्रेक्ष्य में एक प्रासंगिक विषय रहा है।
- उन्होंने अपने उपन्यासों के माध्यम से स्त्री स्वत्व के विभिन्न रूपों, समस्याओं, संघर्षों को विभिन्न परिवेश के साथ चित्रित किया हैं, अतः चर्चित उपन्यासों में स्त्री स्वत्व के विविध रूपों को प्रस्तुत करने में लेखिका ने काफी सफलता प्राप्त हुई है।
- स्त्रियाँ अपनी स्वतंत्रता एवं अस्तित्व के लिए संघर्ष कर एक नई दिशा खोलती हैं और साथ ही जिन्हें स्वत्व को एक व्यापक सरोकार से जोड़ती हैं, जिससे उनको अपने लिए एक नया माहौल एवं नई परिवेश मिलता है, जो अपने आप में एक महत्वपूर्ण उपलब्धि मानी जाएगी।
- हमारे देश की प्रगति एक सतत, दीर्घकालिक प्रक्रिया है। पिछले कुछ वर्षों से स्त्रियों ने अपनी कड़ी मेहनत और विद्रोह की कई सकारात्मक बदलाव समाज में लाई हैं। आज स्त्रियाँ अपने अधिकारों के लिए सक्रिय रूप से लड़ रही है, जिससे उनके जीवन की परिभाषा बदल रही है।

- स्त्रियों का शोषण आज भी हर क्षेत्र में हो रहा है, लेकिन आधुनिक स्त्रियों ने इसका विरोध करना शुरू किया है और वह अब आर्थिक रूप से स्वतंत्र होती, सबल बनती जा रही हैं।
- आजकल स्त्रियाँ सफलता के दौर पर है वे शिक्षा के माध्यम से अपने स्वत्व को बनाए रखकर अपने अधिकारों के लिए लड़ती है और स्वतंत्रता का अनुभव करती हैं, लेकिन दुखद वास्तविकता यह है कि आज भी कई स्त्रियाँ ऐसी हैं जिन्हें अपने स्वत्व और अस्तित्व की पहचान दूसरों से माँगनी पड़ती है क्योंकि समाज में एक ऐसी अनैतिक व्यवस्था चलती है जहाँ स्त्रियों पर बहुत अधिक अनैतिक नियंत्रण होता है।
- और कभी- कभी तो शिक्षित स्त्रियाँ भी अपने अधिकारों से वंचित हो जाती हैं और ऐसी आंतरिक और बाह्य परिवेश के दबाव के कारण व्यक्ति अपने स्वत्व खो देता है और अस्तित्वहीन जीवन जीने को मजबूर एवं विवश हो जाती है। अस्तित्वहीन स्त्रियों की हालत आत्मविश्वासहीन एवं आत्मसम्मानहीन हो जाती है। चर्चित उपन्यासों में ऐसे अनेक स्त्रियाँ है जो अपने स्वत्व की तलाश में भटकती रहती है।
- इस प्रकार के पारम्परिक अनैतिक मूल्यों से बचने केलिए स्त्री को सजग एवं जागरूक होना अनिवार्य है।
- यहाँ लेखिका ने शोषित- पीड़ित, संघर्षभरित- त्रासदीपूर्ण स्त्रियों के स्वत्वों का वस्तुनिष्ठ वर्णन करने के साथ आधुनिक विचारधारा से ओतप्रोत, सशक्त, जिद्दी, विद्रोही, स्वाभिमानी स्त्रियों के सफलतापूर्ण स्वत्व का वर्णन भी दर्शाया हैं।
- शादी के बाद अपनी सुख- सुविधाओं एवं अस्तित्व को खोकर सिर्फ अपने ससुराल वालों केलिए कष्टमय जिन्दगी व्यतीत शिक्षित स्त्री की व्यथा- कथा आज भी जारी हैं।

- शिक्षा के अभाव में स्त्रियों की हालत, शारीरिक तथा मानसिक शोषण के शिकार बनने की विवशता और संयुक्त पारिवारिक विघटन के नेपथ्य में उत्पन्न समस्याओं का अध्ययन करते हुए लेखिका ने पारिवारिक स्नेह- सौहार्द को बनाये रखने का आग्रह किया है।
- उन्होंने स्त्रियों के शोषण के प्रति आक्रोश व्यक्त करके और स्त्री शिक्षा का समर्थन करके महिलाओं के प्रति सकारात्मक दृष्टिकोण अपनाया है, जिससे स्त्रियों को अपनी समस्याओं का सामना करने की क्षमता, दृढ़ संकल्प और आत्मनिर्भर बनने की शक्ति मिलती है।
- स्त्रियों को आत्मनिर्भर बनने के लिए शिक्षित होना जरूरी है, तभी वे अपने अधिकारों के प्रति जागरूक होंगी और पुरुषों की गुलामी से मुक्त होकर समाज में अपनी स्वत्व की खोज कर स्वतंत्र अस्तित्व एवं अस्मिता स्थापित कर सकेंगी।
- समसामयिक आर्थिक विषमताओं एवं शोषण की प्रक्रिया को एक विडम्बना के रूप में स्वीकार करते हुए लेखिका ने इस विडम्बना के प्रति हो रहे विद्रोह को अपने प्रतिनिधि पात्रों के माध्यम से विविध रूपों में व्यक्त किया है।
- कश्मीर में आतंकवादियों के अत्याचारों, बहुओं और बेटियों की इज्जत लूटने वाले आतंकवादियों की क्रूरताओं और बलात्कारों के शिकार बनी स्त्रियों के प्रति लेखिका ने अपनी संवेदना एवं आक्रोश प्रकट की है।
- बदलते सामाजिक मूल्यों तथा मान्यताओं के नेपथ्य में जाति एवं धर्म से सम्बन्धित विचारों में बदलाव की माँग करते हुए लेखिका ने सर्वहारा वर्ग को सामाजिक न्याय दिलाने के पक्ष में अपने विचार व्यक्त किए हैं।
- उनका साहित्य किसी दर्शन या सिद्धांत से प्रभावित नहीं अपितु बदलती युगीन परिस्थितियों का दस्तावेज है।

- उन्होंने अपने उपन्यासों के दौरान परिवार, अर्थ, राजनीति, धर्म, संस्कृति, स्त्री आदि विभिन्न आयामों का अंकन कर अपनी सामाजिक प्रतिबद्धता पूरी तरह से निभाई है।
- उनके उपन्यासों में मध्यवर्गीय लोकजीवन, ग्राम अंचल, नगरीय जीवन के साथ विदेशी परिवेश भी दर्शाया है।
- चन्द्रकान्ता के लेखन बेहतर दुनिया और बेहतर भविष्य की कामना से प्रेरित है इसलिए उन्होंने मांगपरक लेखन न कर भारतीय संस्कृति के आदर्श को प्रधानता दी है।
- अनमेल विवाह को एक विडम्बना के रूप में दर्शाकर लेखिका ने शिक्षार्जन और आर्थिक स्वावलंबन को इस समस्या के समाधान के रूप में स्वीकार किया है।
- उनके उपन्यासों में स्त्री प्रतिरोध का एक नया दृष्टिकोण अपनाया गया है तथा स्त्री की समस्याओं की वस्तुनिष्ठ एवं विश्लेषणात्मक अभिव्यक्ति होने के साथ- साथ उन्होंने उनसे बाहर निकलने की रास्ते भी खोली हैं।
- उनके कथानक में रोचकथा, कौतूहल, सजीवता एवं सूत्रबद्धता, मार्मिकता और प्रतीकात्मकता के प्रसंग आए हुए हैं।
- विवेच्य उपन्यास स्त्री स्वत्व के संदर्भ में सोचने के लिए पाठकों को प्रेरित करते हैं। जिसके परिणामस्वरूप स्त्री के प्रति समाज के दृष्टिकोण में परिवर्तन की प्रेरणा मिल रही है। शोध अध्ययन की यह मुख्य उपलब्धि माननी होगी।
- प्रत्येक उपन्यासों के शैलीपक्ष सिद्धियों के सम्बन्ध में कहा जा सकता है कि शिल्प के स्तर पर वे एक सिद्ध हस्त कलाकार है। संरचना की दृष्टि से उनके उपन्यासों की बनावट एवं बुनावट प्रभावी की गई है तथा उनमें कहीं भी अनावश्यक फैलाव या स्फीति नहीं है। यही कारण उनके उपन्यासों में प्रयुक्त प्रत्येक घटना अपनी पूरी सार्थकता से मूल घटना के साथ सहज सम्बन्ध बनाए रखती है।

- आधुनिक स्त्री जागरूक है और अपनी स्वत्व को पहचानती है साथ ही आनेवाली पीढ़ी को स्पष्ट संकेत देना चाहती है कि अपने अस्तित्व को बनाए रखने केलिए और तुरन्त सफलता प्राप्त करने केलिए हमें कभी भी अपनी नैतिक मूल्यों की तिलांजलि नहीं देनी चाहिए क्योंकि सुखद भविष्य की कल्पना उदात्त जीवन मूल्यों के पालन और निर्वाह में ही है। चन्द्रकान्ता के उपन्यासों में प्रतिपादित हरेक स्त्री पात्र अपनी स्वत्व को पहचानकर उसे बनाए रखने की कोशिश करती है।

I. Examiners

Internal Examiner:
Dr. Garima Srivastava
Professor
Centre of Indian Languages,
School of Language Literature and Culture Studies
Jawaharlal Nehru University
Delhi-110067

External Examiner :
Prof. M. Shyam Rao
Department of Hindi
School of Humanities
University of Hyderabad
Hyderabad-500046